JAIN REFERENCE LIBRARY
ACHARYA SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA
12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

1545 1545_Search_Results_For_go

(1) आठ गोचरभूमियां : ऋज्वी आदि , (2) इन्द्रगोपक , (3) गौतमविजय - १, (4) " एक्काइ " का असाध्य रोगों से पीड़ित होना, (5) " त्रस भूत प्राणी त्रस है, और त्रस प्राणी त्रस है. ये दोनों वाक्य समान अर्थ वाले है " ऐसा गौतम ने कहा, (6) " संग्राम में मरने वाला देवता होता है " इस सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न, (7) (डॉ०) प्रेमप्रकाश गौतम, (8) 31 के 32 सागरोपम, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (9) 4 प्रकृतियाँ अघाती क्यों ?, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (10) अंगउ, (11) अंगउवंग, (12) अंगओलगूं, (13) अंगमंगो, (14) अंगूंथल, (15) अंगूठी, (16) अंगूथली, (17) अंगोपांग, (18) अंगोपांग के 3 भेद, (19) अंगोपांग नाम कर्म, (20) अंगोल, (21) अंगोवंग, (22) अंगोवंगाइं, (23) अंगोहल, (24) अंगोहलिं, (25) अंगोहली, (26) अंगोहलेऊण, (27) अंडगोलिक मनुष्य, (28) अंडगोलिक मनुष्य, जिज्ञासा - सौम्यप्रभविजय, (29) अंडगोलिक मनुष्य, समाधान - शीलचन्द्रविजय, (30) अंडगोलिक मनुष्यनुं मृत्यु क्यारे ?, जिज्ञासा - परमयशविजय, (31) अंतगो, (32) अंतर-बाह्य व्रण के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (33) अंतरंतगो, (34) अंतरदीवगो, (35) अंदोलगो, (36) अंद्रगोप, (37) अंधकवृष्णि राजा का पुत्र गौतम कुमार, (38) अंधिल्लगो, (39) अंबिलजवागू, (40) अइरेगो, (41) अइसंपओगो, (42) अउंगउ-मुगउ, (43) अकसिणपवत्तगो, (44) अक्खाडगो, (45) अक्खायगो, (46) अगंडिगोह, (47) अगो, (48) अगोचर, (49) अगोचरनी गत्य, (50) अगोष, (51) अग्गतावसगोत्ते, (52) अग्गिवेससगोते, (53) अग्गोदयं, (54) अग्गोयर, (55) अग्गोवरयंकरेति, (56) अग्नि का लक्षण, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (57) अग्नि का लक्षण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (58) अग्नि की योनि उष्ण कैसे, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (59) अघृणित कुलों में गोचरी का निषेध , (60) अङगोपाङगनाम, (61) अजितनाथ-घरदेरासर जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (62) अज्जकालगो, (63) अज्जगो, (64) अज्जगोविंदो, (65) अज्जणग गोयमपुत्त, (66) अज्जमंगू, (67) अज्जुण गोमायुपुत्त, (68) अज्जुण गोयमपुत्त, (69) अट्टालगो, (70) अट्ठिलग्गो, (71) अट्ठिल्लगो, (72) अड्ढोरुगो, (73) अणाभोगो, (74) अणिगूहंतो, (75) अणिगूहियबलविरिए, (76) अणुओगो, (77) अणुजोगो, (78) अणुभागो, (79) अणुरंगो, (80) अणुलोमवाउवेगो, (81) अणुव्विग्गो, (82) अण्हायगो, (83) अतिवेगो, (84) अतिहिसंविभागो, (85) अद्दागो, (86) अद्धाणपवण्णगो, (87) अनंतनाथ जिनालय, नेमुभाईनी वाडी, गोपीपुरा, सुरत, (88) अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सर्वप्रथमवार कयुं सम्यक्त्व प्राप्त करे ?, लेखक - कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय, (89) अनित्य निगोद, (90) अनित्यनिगोत, (91) अनुपगूहन, (92) अनुभागोदीरणा, (93) अनुयागो, (94) अनुयोग की प्रवृत्ति : गौ दृष्टांत , (95) अनुयोगद्वार - 1, 2 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - महावीर जैन विद्यालय, शुद्धिकार - गोयमचन्द्रविजय, (96) अनेक लोगों ने नन्द की प्रशंसा की और वह हर्षित हुआ , (97) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के जंघादि के रोगों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (98) अपवरगो, (99) अब्भंगो, (100) अभग्गजोगो, (101) अभग्गो, (102) अभिओगो, (103) अभिओग्गो, (104) अभिमुखनामगोत्र, (105) अभिमुखनामगोत्र:, (106) अभिमुखनामगोत्रा, (107) अभियोगो, (108) अमग्गउ, (109) अमग्गो, (110) अयगोलो, (111) अयाती प्रकृतियों मे रस की तीव्रता-मंदता, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (112) अर्जुन गोमायुपुत्र, (113) अर्जुन गौतमपुत्र, (114) अर्जुनक गौतमपुत्र, (115) अर्थ और मानकरण की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (116) अर्धस्वर्गोत्कृष्ट, (117) अर्धस्वर्गोदय, (118) अवंगो, (119) अवइन्नगो, (120) अवगूढ, (121) अवगूहितो, (122) अवड्ढगोलावलिच्छाया, (123) अवद्धगाढलगोलछाया, (124) अवद्धगोलच्छाया, (125) अवद्धगोलपुंजछाया, (126) अवधिज्ञान के सम्बन्ध में आनन्द और गौतम का संवाद, (127) अवाणगू, (128) अविओगो, (129) अव्वत्तलिंगो, (130) अश्व के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (131) असमणपाउग्गो, (132) असिलोगो, (133) अस्सादणसगोत्ते, (134) अहाभद्दगो, (135) अहियोगो, (136) आंगूं, (137) आंगूळी, (138) आउत्तगो, (139) आउयकम्मस्स संवट्टगो, (140) आकाशास्तिकायनो घनगोलक आकार, जिज्ञासा - सुव्रतचन्द्रविजय, (141) आकाशास्तिकायनो घनगोलक आकार, समाधान - त्रैलोक्यमंडनविजय, (142) आकीर्ण और खलुंक अश्व के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (143) आख्यायक की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (144) आगंतुगो, (145) आगउ, (146) आगमिपल्लगो, (147) आजनी भूगोल - खगोल पर विमर्श , (148) आजावगो, (149) आजीविक तीर्थंकर गोशालक का कथानक, (150) आज्ञा व्यवहार : गूढ़पदों में प्रतिसेवना-प्रायश्चित्त-कथन , (151) आत्म-पर के अंतकरादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (152) आत्मंभर-परंभर की अपेक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (153) आत्मगोचरा, (154) आत्मा कर्मनो कर्ता-भोक्ता व्यवहारथी केम ?, लेखक - सुव्रचचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (155) आत्मानुकंप-परानुकंप के भेद से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (156) आदेश्वर जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा, सुरत, (157) आदेश्वर (कांकरियानुं) जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा, सुरत, (158) आदेश्वर - अष्टापद जिनालय, खपाटीया चकला, गोपीपुरा , सुरत, (159) आदेश्वर जिनालय, काजीनुं मेदान, गोपीपुरा , सुरत, (160) आदेश्वर जिनालय, गोदडनो पाडो, पाटण , (161) आदेश्वर जिनालय, छापरीया गोरी, महीधरपुरा , सुरत, (162)

आदेश्वर जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा , सुरत, (163) आदेश्वर जिनालय, वागोळनो पाडो, पाटण , (164) आदेश्वर जिनालय, सुभाषचोक, गोपीपुरा, सुरत, (165) आदेश्वर-घरदेरासर जिनालय, कायस्थ महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (166) आदेश्वर-घरदेरासर जिनालय, कायस्थ महोल्लो, गोपीपुरा, सुरत, (167) आधुनिक भूगोल अने जैनधर्म , (168) आनन्द के प्रव्रज्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न और भगवान का समाधान , (169) आनन्द स्थविर का भगवान के समक्ष गौशालक के वचनों का कथन और भगवान का किया हुआ समाधान, (170) आपात-संवास भद्र की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (171) आमोयगो, (172) आयारगोअर, (173) आयुष्य के अपवर्तन मे जीव का अनुभव, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (174) आरक्खिगो, (175) आर्तध्यान के स्वामी, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (176) आर्य-अनार्य की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (177) आलग्गो, (178) आलावगो, (179) आलिंगो, (180) आलोचनार्ह का व्यवहार : व्याध और गौ दृष्टांत , (181) आवआस (उप+गूह्), (182) आवलियाठावगो, (183) आवश्यकसूत्र - मलयगिरीय टीका, भाग - 3 के मतांतर, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (184) आवश्यकसूत्र की वृत्तियों की विभिन्न अर्थपरंपराएँ, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (185) आवश्यकसूत्र संदर्भे थोडीक जिज्ञासाओ, जिज्ञासा - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (186) आवश्यसूत्र - मलयगिरीय टीका, भाग - 2 के मतांतर, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (187) आवागो, (188) आसंगो, (189) आसंसपओगो, (190) आस्रव और बंधहेतु में क्या फर्क है ?, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (191) आहारकशरीराङ्गोपाङ्ग, (192) आहारकाङ्गोपाङ्गनाम, (193) आहारगंगोवंगणाम, (194) आहेडगो, (195) इंदगोवए, (196) इंदगोवग, (197) इंदगोवय, (198) इंदगोवया, (199) इंदगोवेइ, (200) इंदणागो, (201) इंद्रभूति (गौतम), (202) इंद्रभूति गौतम (गणधर), (203) इक्ष्वाकुवंश, काश्यपगोत्र , (204) इतर निगोद, (205) इतरनिगोद, (206) इत्थीनामगोत्तं, (207) इन्द्रक निगोद, (208) इन्द्रगोपक, (209) इन्द्रभूति (गौतम गणधर), (210) इन्द्रभूति गौतम कथा, (211) इन्द्रभूती गौतम, (212) इन्द्रिय के विषय बद्ध कैसे, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (213) इन्द्रियगोचरा, (214) इहलोगो, (215) इहार्थ-परार्थ की अपेक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (216) ईच्छादि योगो कया गुणठाणे ?, लेखक - सौम्यचन्द्रविजय, (217) ईर्यापथिकी आस्रव में कर्मबंध की स्थिति, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (218) ईहा अने अवग्रह - ज्ञान के दर्शन ?, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (219) उक्करिसियखग्गो, (220) उक्खित्तचरगो, (221) उक्खित्तविवेगो, (222) उगउ, (223) उगउमुगउ, (224) उगमुगउ, (225) उगहणंतगो, (226) उग्गोवणा, (227) उग्गोवेति, (228) उच्च गोत्र, (229) उच्च गोत्रकर्म, (230) उच्चगोत्र, (231) उच्चतायभयगो, (232) उच्चागोए, (233) उच्चागोत्ते, (234) उच्चैर्गौत्रः, (235) उच्छिन्नगोत्तागारं, (236) उच्यन्त अष्टौ\' पद मे संधि, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (237) उज्झितक के गोत्रास भव का कथानक, (238) उड्ढगो, (239) उत्तरगोग्रह, (240) उत्तरोष्ठादि रोगों के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (241) उत्तान और गंभीर उदक के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (242) उत्पद्यमान चौबीसदंडकों में उत्पाद के चतुभँगों का प्ररूपण, (243) उत्सर्गौत्सर्गसूत्रम्, (244) उदंतवाहगो, (245) उदायिमारगो, (246) उद्वर्तमानादि चौबीसदंडकों में उद्वर्तन के चतुभँगों का प्ररूपण, (247) उन्नत-प्रणत मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (248) उन्नत-प्रणत वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (249) उपगूहन, (250) उपगूहनं, (251) उपसर्गों में अविचलन : देवता द्वारा संहरण , (252) उमज्जायणसगोत्ते, (253) उमरवाडी पार्श्वनाथ जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (254) उम्मग्गनिम्मग्गो, (255) उम्मज्जगो, (256) उल्लपडसाडगो, (257) उवगूहिअ, (258) उवगो, (259) उवचरगो, (260) उवच्छगो, (261) उवधायपंडगो, (262) उवीलगो, (263) उस्सग्गो, (264) उस्साबिन्दूथिबुगो, (265) उस्सुगो, (266) ऊंडळगूंडळ, (267) ऊणगसयभागो, (268) ऊभंगउ, (269) ऊभगउ, (270) ऋजु वक्र मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (271) ऋजु वक्र वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (272) ऋद्धि गौरव, (273) ऋद्धिगौरव, (274) ऋषभदास निगोता, (275) ऋषिभद्रपुत्र सम्बन्धित गौतम का प्रश्न और भ. महावीर का उत्तर, (276) एक दूसरे के जंघादि के रोगो के परिकर्मो के प्रायश्चित्त सूत्र , (277) एगउ, (278) एगाभोगो, (279) एगूरुय, (280) एगूरूता, (281) एगूरूयदीवे, (282) एगोदगं, (283) एगोरुय, (284) एगोरुया, (285) एगोरूय, (286) एयग्गो, (287) एलावच्चसगोत्तं, (288) औदारिक अंगोपांग, (289) औदारिक कामभोगों का , (290) औदारिकशरीरांगोपांगनाम, (291) औदारिकाङ्गोपाङ्गनाम, (292) कंगू, (293) कंगूया, (294) कंगूरों का वर्ण और प्रमाण, (295) कंड्गू, (296) कच्चे पक्के फल के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (297) कटगोला—नरसिंहपुर, उत्तरप्रदेश-बिहार-बंगाल, (298) कथागोष्ठी, (299) कर्मविषयक एक नवो उल्लेख, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (300) कलागोष्ठी, (301) कल्प विमानों में देवेन्द्रों द्वारा दिव्य भोगों के भोगने का प्ररूपण, (302) कल्पनागौरवम्, (303) कांगउ, (304) काचा गोरसयुक्त कठोळमां निगोद अने पंचेन्द्रिय जीवोनी उत्पत्ति !, लेखक - तीर्थतिलकविजय, (305) काम - भोगों में आसक्ति का निषेध , (306) काम-भोगों की अनित्यता , (307) कामभोगों का निदान और फलश्रुति , (308) कामभोगों में अनासक्त निर्ग्रन्थ , (309) कालोदाई आदि का गौतम के प्रति अस्तिकाय सम्बन्धि शंका का निरूपण, (310) काव्यगोष्ठी, (311) कुंढगोठि, (312) कुंथुनाथ जिनालय, गोपीपुरा, मेइन रोड , सुरत, (313) कुरंगो, (314) कूटागार के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (315) कूटागारशाला के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुभँगों का प्ररूपण, (316) कृश और दृढ़ की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (317) कृष्णगोपी विरहमेलापक भ्रमरगीता , (318) कृष्णगोपीविरहमेलापकफागु, (319) केवलज्ञानप्राप्ति के बाद कितने परीषह ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (320) केवलिसमुद्घात के स्वामी के विषय में मतांतर, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (321) केशिगौतमीय, (322) केशी गौतम चर्चा ठाल , (323) केशी गौतम चोपाई , (324) केशी गौतम चौढालिया , (325) केसिगोयमिज्ज, (326) केसी गोयम संधि, (327) कोरक के

दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (328) क्या तीर्थंकर भगवंत को भी देशना का परिश्रम होता है ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (329) क्या शरीर में बहता खून अचित होता है ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (330) क्या शरीर में बहता खून अचित होता है ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (331) क्रुद्ध गौशालक द्वारा फेंकी गई निष्फल तेजोलेश्या ने गौशालक को ही जलाया, (332) खगउड, (333) खग्गूड, (334) खेडिया-जगा-जगोजी, (335) गंधर्व गोरी, (336) गंधव गोरी, (337) गउ, (338) गउंछणउं, (339) गउख, (340) गउखु, (341) गउड, (342) गउड (गम्), (343) गउडीय, (344) गउण, (345) गउयडइ, (346) गउर, (347) गउरउ, (348) गउरी, (349) गउसाउल्ल, (350) गति-अगति के लक्षण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (351) गन्धादि द्रव्य भावुक या अभावुक ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (352) गन्धादि द्रव्य भावुक या अभावुक ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (353) गरणां-गोर, (354) गर्भपातजन्य मृगापुत्र का रोगों से पीड़ित होना, (355) गामगोह, (356) गीतगोविंदादर्श, (357) गीतगोष्टी, (358) गूंडां, (359) गूंफइ, (360) गूंहली, (361) गूख, (362) गूगलि, (363) गूगलीउ, (364) गूगळी, (365) गूगूलिया, (366) गूज, (367) गूजर, (368) गूजर-देस, (369) गूजर-वाइ, (370) गूजरडी, (371) गूजरी, (372) गूज्झ, (373) गूज्य, (374) गूझ, (375) गूझ्य, (376) गूडा, (377) गूडिय, (378) गूडी, (379) गूढ, (380) गूढगोचर, (381) गूढदंत, (382) गूढदत्त/गूढदन्त, (383) गूढात्मा, (384) गूढी, (385) गूणी, (386) गूतउ, (387) गूध, (388) गूयाडलनगर, (389) गूरज, (390) गूरि, (391) गूह, (392) गूहड, (393) गूहन, (394) गूढ़ विनोद, (395) गूढ़ब्रह्मचारी, (396) गो, (397) गो आदि के सम्बन्ध में असावद्य भाषा विधि , (398) गोंछ, (399) गोंजल, (400) गोंजी, (401) गोंठी, (402) गोंड, (403) गोंडी, (404) गोंदल, (405) गोंदलिय, (406) गोंदी, (407) गोंदीण, (408) गोअंगे, (409) गोअंट, (410) गोअग्गा, (411) गोअम, (412) गोअला, (413) गोआ, (414) गोआडइ, (415) गोआलिआ, (416) गोइ, (417) गोइक, (418) गोई गोसली, (419) गोउल, (420) गोकण्ण, (421) गोकर्ण, (422) गोकल, (423) गोकलि, (424) गोकळदास, (425) गोकिलंज, (426) गोकिलिंज, (427) गोकुल, (428) गोकुल - १ , (429) गोकुलचंद, (430) गोकुलदास, (431) गोकुलदास - २ , (432) गोकुलनाथजी, (433) गोकुलभाई, (434) गोकुलिस्थान, (435) गोक्षीर, (436) गोख, (437) गोखर, (438) गोखलक, (439) गोगवेश, (440) गोगिडउ, (441) गोगीडउ, (442) गोग्रास, (443) गोघर, (444) गोचर होय, (445) गोचर-अतिहार-प्रतिकमण , (446) गोचर:, (447) गोचरकाल , (448) गोचरचर्या , (449) गोचरचर्या के लिए निकले हुए गौतम का आनन्द के समक्ष आना, (450) गोचरभूमि, (451) गोचरवर्या, (452) गोचराग्र का अर्थ , (453) गोचरि, (454) गोचरी, (455) गोचरी में प्रविष्ट भिक्षु के आहार करने की विधि , (456) गोचरी वृत्ति, (457) गोचार, (458) गोच्चअ, (459) गोच्चिय, (460) गोच्छक विशे थोडीक विचारणा, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय, (461) गोच्छकादि के वितरण का विवेक , (462) गोच्छड, (463) गोच्छणव, (464) गोच्छय, (465) गोच्छा, (466) गोच्छुभ, (467) गोछउ, (468) गोजलोक, (469) गोजलोय, (470) गोजा, (471) गोज्ज, (472) गोज्झ, (473) गोज्झक्खिणी, (474) गोटको, (475) गोटिको, (476) गोटी, (477) गोट्ठ, (478) गोट्ठग, (479) गोट्ठमाहिल, (480) गोट्ठामाहिल, (481) गोट्ठामाहिल्ल, (482) गोट्ठिय, (483) गोट्ठी, (484) गोटचका, (485) गोठ, (486) गोठि, (487) गोठिय, (488) गोठिसे, (489) गोड, (490) गोडउ, (491) गोडा, (492) गोडिहिलियां, (493) गोडी, (494) गोडी छंद, स्वप्नाधिकार, (495) गोडी पार्श्व बृहत् स्तवन, (496) गोडी पार्श्व स्तवन , (497) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, नगरशेठनी पोळ, सुरत, (498) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, राळज, खंभात, (499) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय (अलग गभारो), कसुंबीयावाडो, पाटण, (500) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय (भोंयरामां), बोरपीपळो, खंभात, (501) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, आलीपोर, चीखली, नवसारी, (502) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, गोलवाड, पाटण , (503) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, गोळशेरी, महीधरपुरा, सुरत, (504) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, जमालपुर-टोकरशानी पोळ(प्रेरणा तीर्थ), अमदावाद, (505) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, नरोडा, अमदावाद, (506) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, मंगलपारेखनो खांचो, अमदावाद, (507) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, समेतिशखरनी पोळ , अमदावाद, (508) गोडी पार्श्वनाथ स्तवन , (509) गोडी पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा, सुरत, (510) गोडी पास स्तवन, (511) गोडी प्रभु गीत , (512) गोडीदास, (513) गोडीप्रभु गीत, (514) गोड्ड, (515) गोड्डिका, (516) गोण, (517) गोणंद (नगर), (518) गोणक, (519) गोणत्तय, (520) गोणपोतल, (521) गोणस, (522) गोणिक्क, (523) गोणिय, (524) गोणी, (525) गोण्ड, (526) गोतम, (527) गोति, (528) गोतिहर, (529) गोतिहाणी, (530) गोतिहिरउ, (531) गोती, (532) गोतीर्थ, (533) गोतीर्थ अने जलवृद्धिनो बे तरफथी देखाव , (534) गोतीहर, (535) गोत्त, (536) गोत्तफुसिया, (537) गोत्तास, (538) गोत्थुभ, (539) गोत्थुभग, (540) गोत्र, (541) गोत्र कर्म, (542) गोत्र के 2 भेद, (543) गोत्रकर्म, (544) गोत्रज, (545) गोत्रम्, (546) गोत्रास, (547) गोत्रास का मांस-भक्षण और नरक आदि के भव, (548) गोत्रासिया, (549) गोत्रिककर्म, (550) गोत्रिय, (551) गोत्वम्, (552) गोथुभ, (553) गोथूभ, (554) गोथूभा, (555) गोदड, (556) गोदडदास, (557) गोदत्ता, (558) गोदा, (559) गोदावरी, (560) गोदास, (561) गोदासगण, (562) गोदी, (563) गोदोहण, (564) गोदोहिका, (565) गोद्दह, (566) गोद्दहिल्ल, (567) गोध, (568) गोधउ, (569) गोधलु, (570) गोधसालक, (571) गोधा, (572) गोधिका, (573) गोधीका, (574) गोधूम, (575) गोधो, (576) गोधो (गोवर्धन), (577) गोनस, (578) गोनिषध्या, (579) गोनिषध्यार्षपर्यंक, (580) गोनु, (581) गोनुं, (582) गोप, (583) गोपच्छेलक, (584) गोपाल, (585) गोपाल - १ , (586) गोपाल - ३ , (587) गोपाल - ४ , (588) गोपाल - ५ , (589) गोपाल हरि देशमुख , (590) गोपालअ, (591) गोपालक, (592) गोपालजी, (593) गोपालजी - १ , (594) गोपालदास, (595) गोपालदास - १ , (596) गोपालदास - २, (597) गोपालदास - ४ , (598) गोपालदास - ५ , (599) गोपालिक-महत्तर, (600) गोपालिका, (601) गोपालिका आर्या, (602) गोपालिका कथा, (603) गोपाली, (604) गोपाळ, (605) गोपाळदास, (606) गोपाळानंद, (607) गोपाविवा, (608) गोपिविउ, (609) गोपीकृष्ण, (610)

गोपीभाण, (611) गोपुर, (612) गोपेन्द्र, (613) गोप्ता, (614) गोप्पी, (615) गोप्फण्ण, (616) गोप्य, (617) गोफण, (618) गोफणउ, (619) गोफणा, (620) गोफणि, (621) गोफणियो, (622) गोबर, (623) गोबरगेस वगेरे गेसो सचित्त के अचित्त ?, जिज्ञासा - राजहेमविजय, (624) गोबरगेस वगेरे गेसो सचित्त के अचित्त ?, समाधान - मलयगिरि-प्रेमहंसविजय, (625) गोबरे, (626) गोबहुल, (627) गोबहुल - विशेषण के नाम ?, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय, (628) गोब्बर, (629) गोब्बरगाम, (630) गोभद्र शेठ, (631) गोभद्र सेठ, (632) गोभूति, (633) गोमट, (634) गोमट्ट सार , (635) गोमट्ट सार बाला, (636) गोमट्टसार भाषाटीका, (637) गोमट्टसार वचनिका , (638) गोमती, (639) गोमतीबहेन, (640) गोमद्दा, (641) गोमय, (642) गोमय (गोबर) विषघाती , (643) गोमयकीटक, (644) गोमयकीडग, (645) गोमाऊ, (646) गोमाणसिया, (647) गोमानसिकाओं की संख्या, (648) गोमायु, (649) गोमायुपुत्त, (650) गोमायुपुत्र, (651) गोमिआ, (652) गोमिणी, (653) गोमिय, (654) गोमी, (655) गोमुख, (656) गोमुखमणि, (657) गोमुखी, (658) गोमुह, (659) गोमुहिय, (660) गोमुही, (661) गोमूत्रिका, (662) गोमूत्रिका गति, (663) गोमूत्रिकागति, (664) गोमूत्री, (665) गोमेद, (666) गोमेध, (667) गोमेह, (668) गोम्मि, (669) गोम्मी, (670) गोम्हि, (671) गोम्हिय, (672) गोम्ही, (673) गोय, (674) गोयम, (675) गोयमकेसिज्ज, (676) गोयमज्जिया, (677) गोयमपुत्त, (678) गोयमा, (679) गोयरउ, (680) गोयल, (681) गोयावरी, (682) गोयुत, (683) गोर, (684) गोरंफिडी, (685) गोरंभउ, (686) गोरक्खर, (687) गोरखनाथ (नाथपंथीसाधु), (688) गोरखनाथ पावडी , (689) गोरगिरि, (690) गोरटुं, (691) गोरड, (692) गोरडित, (693) गोरडी, (694) गोरति, (695) गोरथ, (696) गोरथक, (697) गोरप्पडिआ, (698) गोरमिग, (699) गोरव, (700) गोरवु, (701) गोरस गोली, (702) गोरसभावित क्षेत्र उत्कृष्ट क्यों ?, (703) गोरह, (704) गोरहग, (705) गोरा, (706) गोरा बादल कथा, (707) गोरा बादल कथा अथवा पद्मिनी चौपई, (708) गोरा बादल की रात, (709) गोरा बादल वात , (710) गोराबादल कथा , (711) गोराबादल वात, (712) गोरिग, (713) गोरिहिअ, (714) गोरी, (715) गोरी प्रभूति के कथानक संक्षेप, (716) गोरी-सांवलीविवाहगीत, (717) गोरी-सांवलीसंवाद, (718) गोरू, (719) गोरूचंदन, (720) गोरे, (721) गोर्बरग्राम, (722) गोल, (723) गोल डिब्बों में जिन-अस्थियाँ, (724) गोल विमान, (725) गोलउ, (726) गोलओ, (727) गोलक, (728) गोलणी, (729) गोलव्यायन, (730) गोलव्वायण, (731) गोला, (732) गोलांटां, (733) गोलि, (734) गोलिका, (735) गोलिकायण, (736) गोलिकायन, (737) गोलिय, (738) गोलिया, (739) गोलियालिंग, (740) गोलियालिंछ, (741) गोली, (742) गोलीडां, (743) गोलुकि, (744) गोलों का रूपक , (745) गोलोम, (746) गोलोमन्, (747) गोल्य, (748) गोल्ल, (749) गोल्ला, (750) गोल्ह, (751) गोल्हा, (752) गोल्ही, (753) गोळीडां, (754) गोव, (755) गोवत्स, (756) गोवर, (757) गोवरपीठ, (758) गोवर्धन - ५ , (759) गोवर्तिक, (760) गोवर्धन, (761) गोवर्धन (सूरि), (762) गोवर्धन - २, (763) गोवर्धन - ३ , (764) गोवर्धन - ४, (765) गोवर्धन - ७, (766) गोवलिया, (767) गोवल्लायण, (768) गोवल्लायन, (769) गोवल्ली, (770) गोवळ, (771) गोवहिया, (772) गोवांदरे, (773) गोवाल, (774) गोवालिय-महत्तर, (775) गोवालिया, (776) गोवाली, (777) गोवाळ, (778) गोविंद, (779) गोविंद (मुनि) , (780) गोविंद - १ , (781) गोविंद - २ , (782) गोविंद - ३ , (783) गोविंद - ४ , (784) गोविंद गिल्लाभाई, (785) गोविंद भिक्षु कथा, (786) गोविंद वाचक कथा, (787) गोविंद सिंह, (788) गोविंदजी, (789) गोविंदणिज्जुत्ति, (790) गोविंददत्त, (791) गोविंददास, (792) गोविंददास - १, (793) गोविंददास - २ , (794) गोविंददास - ३, (795) गोविंदब्राह्मण कुमारस्वर, (796) गोविंदराम, (797) गोविंदराम(महाराज) , (798) गोविंदरास, (799) गोविंदवायग, (800) गोविंदाचार्य, (801) गोविंदो, (802) गोविअ, (803) गोविन्द, (804) गोविन्द राजा, (805) गोविन्दचन्द्र (गहड़बाल नृपति), (806) गोविन्दनिर्युक्ति, (807) गोविन्दवाचक, (808) गोविन्दाचार्य, (809) गोविल्ल, (810) गोवी, (811) गोवृत्तिक, (812) गोवृषमुद्रा, (813) गोव्यंद, (814) गोव्वतिअ, (815) गोव्वर, (816) गोशपेच, (817) गोशाल, (818) गोशालक, (819) गोशालक का आगमन, (820) गोशालक ने अपने आपको जिन कहा, (821) गोशालक ने कहा-शीतोदग आदिके सेवन में पाप नहीं है, (822) गोशालक ने छ अनतिक्रमणीयों का परुपण किया, (823) गोशालक ने भ. महावीर के गुणगान किये, (824) गोशालो, (825) गोशीर्ष, (826) गोष्ट, (827) गोष्ठ, (828) गोष्ठा, (829) गोष्ठामाहिल, (830) गोष्ठामाहिल (निन्हव), (831) गोष्ठामाहिल और अबद्धिकवाद , (832) गोष्ठामाहिल नि…व कथा, (833) गोष्ठिकों ने अर्जुनमालाकार को बांधा और बन्धुमति भार्या के साथ अनाचार किया, (834) गोष्ठी, (835) गोष्ठीवाद, (836) गोस, (837) गोसंखडी, (838) गोसंखि, (839) गोसग्ग, (840) गोसङ्खिन्, (841) गोसण्ण, (842) गोसर्ग, (843) गोसामी, (844) गोसाल, (845) गोसाविआ, (846) गोसिय, (847) गोसीर्ष, (848) गोस्तुभ, (849) गोस्तूप, (850) गोस्तूप आवासपर्वत की अवस्थिति और प्रमाण, (851) गोस्तूप आवासपर्वत के नाम का हेतु, (852) गोस्तूप के चरमान्त से वलयामुख महापाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर, (853) गोस्तूप राजधानी, (854) गोस्तूपा, (855) गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों से वलयामुखादि महापाताल कलशों के चरमान्तों का अन्तर, (856) गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों से वलयामुखादि महापाताल कलशों के मध्य भागों का अन्तर, (857) गोह, (858) गोहट्ठाण, (859) गोहडिय, (860) गोहत्तण, (861) गोहर्य, (862) गोहली, (863) गोहली, राजस्थान, (864) गोहातक, (865) गोहिया, (866) गोही, (867) गोहीरउ, (868) गोहुं, (869) गोहुर, (870) गोहू, (871) गौ, (872) गोड़ी पार्श्व स्तवन, (873) गोड़ी पार्श्वनाथ सार्द्ध शताब्दी स्मारक ग्रन्थ, (874) गौ अलीक, (875) गौ का दृष्टांत , (876) गौड, (877) गौडी छंद, (878) गौडी पार्श्वनाथ संबंध, (879) गौडी पार्श्वनाथ स्तवन, (880) गौडी प्रभुगीत, (881) गौडीदास, (882) गौडीपार्श्व स्तव, (883) गौडीपार्श्वनाथ छंद, (884) गौडीपास स्तवन, (885) गौण, (886) गौण काल, (887) गौण प्रत्यक्ष, (888) गौणप्रयोजनम्, (889) गौणात्मा, (890) गौणीवृत्ति, (891) गौण्य, (892) गौतम, (893) गौतम - २, (894) गौतम और अतिमुक्त कुमार का संवाद, (895) गौतम का गौशालक की चर्या जानने के लिए

कहना, (896) गौतम का देवताओं के समीप जाना, (897) गौतम का प्रश्न. भगवान का उत्तर, (898) गौतम का महाशतक के पास जाना, (899) गौतम का लौट जाना, (900) गौतम की भिक्षाचर्या, (901) गौतम कुमार, (902) गौतम कुलक बाला. , (903) गौतम कुलक वृत्ति, (904) गौतम के पूछने पर भ. महावीर ने दर्दुरदेव के पूर्व भव का नन्द मणियार का कथानक कहा, (905) गौतम के समीप प्रश्न के लिए प्राश्र्वापत्यश्रमण उदकपेढाल पुत्र का आना, (906) गौतम गणधर, (907) गौतम द्वारा क्षमा याचना, (908) गौतम द्वीप का वर्णन, (909) गौतम ने उज्झितक के पूर्व भव के सम्बन्ध में पूछा, (910) गौतम ने काली देवी के पूर्वभव की पृच्छा की, (911) गौतम ने कालोदाई आदि की शंकाओं का समाधान किया, (912) गौतम ने महाशतक को \' प्रायश्चित करने का \' भगवन्त का कथन कहा, (913) गौतम ने मृगापुत्र के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (914) गौतम ने मृगापुत्र को देखा, (915) गौतम ने स्कंदक का स्वागत किया और स्कंदक ने अपने आने का कारण कहा, (916) गौतम पृच्छा, (917) गौतम पृच्छा चौपई, (918) गौतम पृच्छा बाला. , (919) गौतम पृच्छा स्तवन, (920) गौतम प्रश्नोत्तर स्तवन, (921) गौतम रास, (922) गौतम स्वामी (गणधर), (923) गौतम स्वामी छद, (924) गौतम स्वामी रास, (925) गौतम स्वामी संज्झाय , (926) गौतम स्वामी स्वाध्याय, (927) गौतमकुलक बालावबोध , (928) गौतमकुलक स्तबक, (929) गौतमकेशीय, (930) गौतमगणधर, (931) गौतमद्वीप के नाम का हेतु, (932) गौतमपुत्र, (933) गौतमपृच्छा , (934) गौतमपृच्छा चोपाई, (935) गौतमपृच्छा बालावबोध, (936) गौतमपृच्छा बालावबोध, राजप्रश्नीय बालावबोध, (937) गौतमपृच्छा विवरण , (938) गौतमपृच्छा,अनुत्तरोपपातिकसूत्र बालावबोध , (939) गौतमपृच्छाचौपाइ, (940) गौतमपृच्छानुं स्तवन , (941) गौतमपृच्छाबालावबोध, (942) गौतममुनि कथा, (943) गौतमरास, (944) गौतमरास (मरु-गुर्जर की रचना), (945) गौतमविजय, (946) गौतमस्वामी को केवल ज्ञान, (947) गौतमस्वामी नो रास, (948) गौतमस्वामी रास , (949) गौतमस्वामी स्वाध्याय, (950) गौतमस्वामी- रास, (951) गौतमस्वामीगीत, (952) गौतमस्वामीगीतछन्द, (953) गौतमस्वामीनी सझाय , (954) गौतमस्वामीनो रास, (955) गौतमस्वामीनो रास, (956) गौतमस्वामीरास, (957) गौतमी, (958) गौतमीया, (959) गौधेन, (960) गौपद, (961) गौरखर, (962) गौरगिरि, (963) गौरमुण्ड, (964) गौरमृग, (965) गौरव, (966) गौरव दान, (967) गौरवदास (कवि), (968) गौरवम्, (969) गौरववन्दनक, (970) गौरववन्दनादोष, (971) गौरिक, (972) गौरिकूट, (973) गौरी, (974) गौरी कथा, (975) गौरीबाई, (976) गौरीराणी, (977) गौव, (978) गौशालक और भ. महावीर ने परस्पर एक दूसरे की मरणकाल मर्यादा का निरूपण किया, (979) गौशालक का अपने मरने के बाद निहरण के सम्बन्ध में निर्देश, (980) गौशालक का आनन्द स्थविर के समक्ष अर्थलुब्धवणिक का दृष्टांत कहकर आक्रोश दिखाना, (981) गौशालक का ईर्ष्याभाव, (982) गौशालक का निहरण, (983) गौशालक का पृथक संघ, (984) गौशालक का भगवान के प्रति आक्रोश वचन कहकर स्वसिद्धान्त निरूपण करना, (985) गौशालक का भी तन्तुशाला में आगमन, (986) गौशालक का महापदमभव में जन्म और राज्याभिषेक, (987) गौशालक का सम्यक्त्व परिणाम-पूर्वक कालधर्म, (988) गौशालक की तेजोलेश्या सिद्धि, (989) गौशालक की मंखचर्या , (990) गौशालक के जीव की देवलोक में उत्पत्ति, (991) गौशालक के वचन से क्रुद्ध वैश्यायन के वचन गौशालक के उपर तेजोलेश्या फेंकी, (992) गौशालक जीव के दृढ़प्रतिज्ञ भव से सिद्धगति का निरूपण, (993) गौशालक जीव विमलवाहन के अनेक दु:ख प्रचुर भव और बाद में देव भव, (994) गौशालक ने सर्वानुभूति मुनि को भस्म कर दिया, (995) गौशालक ने सुनक्षत्र मुनि को भी मार दिया, (996) गौशील, (997) गौश्रृंग, (998) गौसर्गिककाल, (999) गौड़पिंगल, (1000) गौड़ी पार्श्व वृहत् स्तव , (1001) गौड़ी पार्श्व स्तव अथवा काजल मेधानुं स्तव , (1002) गौड़ी पार्श्व स्तवन, (1003) गौड़ी पार्श्वनाथ छंद, (1004) गौड़ी पार्श्वनाथ स्तव अथवा मेघ काजल संवाद नुं स्तवन , (1005) गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन, (1006) गौड़ी स्तवन, (1007) ग्यारह अंगो का निर्यूहण , (1008) घयगोलीय, (1009) घाणेन्द्रियरागोपरति, (1010) चंगोड, (1011) चंद्रप्रभु जिनालय (अलग गभारो), गोदडनो पाडो, पाटण, (1012) चंद्रप्रभुस्वामी जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (1013) चंद्रप्रभुस्वामी जिनालय, गोळशेरी, महीधरपुरा, सुरत, (1014) चंद्रप्रभुस्वामी-घरदेरासर जिनालय, गोपीपुरा, मेइन रोड , सुरत, (1015) चंपा पार्श्वनाथ जिनालय, वचली शेरी, गोलवाड, पाटण, (1016) चक्षु:प्राप्यकारिता ?, पत्रचर्चा - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1017) चक्षु:प्राप्यकारिता ?, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1018) चक्षुरिन्द्रिय का परिमाण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1019) चक्षुरिन्द्रिय रागोपरति, (1020) चटाई के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1021) चतुर्गति निगोद, (1022) चतुर्गतिनिगोद, (1023) चतुर्थ भावना : पूर्व मुक्त भोगों के स्मरण का निषेध , (1024) चिंतामणि पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (1025) चित्र अने संभूति, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1026) छह प्रकार की गोचरी , (1027) जंगोटो, (1028) जंगोल, (1029) जंघादि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1030) जंबूद्वीपमां रहेल वृत (गोल) पदार्थोनुं यंत्र , (1031) जम्बूद्वीप के चरमान्त से गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों का अन्तर, (1032) जरगो, (1033) जरगोजी, (1034) जाति आदि के वृषभ के दृष्टांत द्वारा युक्त-अयुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1035) जाति-कुल-बल-रूप और जय संपन्न अश्व के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1036) जाति-कुल-बल-रूप-श्रुत और शील की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1037) जिगोषु, (1038) जिनदास गोधा, (1039) जीवराम अजरामर गौर, (1040) जीवसमास - सवृत्ति (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जैन ग्रंथ प्रकाशन समिति, शुद्धिकार - कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय, (1041) जोगउ, (1042) जोधराज गोधीका, (1043) ज्ञानोत्पादन-प्रकिया, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1044) ठवियगो, (1045) ठागो, (1046) ठामि काउस्सग्गं में नयविचारणा, लेखक - कुमुदचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1047) ठिएपागो, (1048) डागो, (1049) णंगोल, (1050) णंगोला, (1051) णंगोलाभंगसिरोधरे, (1052) णंगोलि, (1053) णंगोलिय, (1054) णंगोलियदीवे,

(1055) णंगोलिया, (1056) णंदगोव, (1057) णंदियगो, (1058) णग्गोघपरिमंडलं, (1059) णग्गोर, (1060) णग्गोह, (1061) णग्गोहमंडले, (1062) णतावगोज्जोआ, (1063) णांगोली, (1064) णागरगो, (1065) णागोद, (1066) णिओगो, (1067) णिगोद, (1068) णिगोय, (1069) णिग्गू, (1070) णिग्गोहवरपायव, (1071) णियगो, (1072) णिरुद्धपरियागो, (1073) णिल्लेवगो, (1074) णिव्विण्णकामभोगो, (1075) णिसेगो, (1076) ण्हाणगोल्लो, (1077) तंगोटी, (1078) तणहारिगो, (1079) तत्स्वभाव\' शब्द मे टचण् प्रत्यय पर वृद्धयभाव, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1080) तमोवाद, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1081) तरतमजोगो, (1082) तवोमग्गो, (1083) तहिंगोलं, (1084) तिगिच्छायणसगोत्ते, (1085) तियभंगो, (1086) तिल के पौधे के सम्बन्ध में भगवान के वचन गौशालक की अश्रद्धा , (1087) तिलहारगकपट्ठगो, (1088) तिवग्गो, (1089) तीर्थंकरनामगोत्र का बंध , (1090) तीर्थकरनामगोत्रं, (1091) तीर्थसिद्ध-अतीर्थसिद्ध, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1092) तुत्तगो, (1093) तेजोलेश्या के दाह से पीड़ित गौशालक ने मद्यपान आदि किये, (1094) तेषां नतोऽहं क्रमान्\' वाक्य मे नम् को क्तप्रत्यय, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1095) त्रागउ, (1096) थालीपागो, (1097) थिबुगो, (1098) दंडपासगो, (1099) दगमग्गो, (1100) दघच्चिन्मात्रविश्रान्तिं/विश्रान्तिर्, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1101) दभियायणस्सगोते, (1102) दमगो, (1103) दव्वाभिओगो, (1104) दशरय निगोत्या, (1105) दाइगो, (1106) दामण्णगो, (1107) दारगोउर, (1108) दाहकालिगो, (1109) दिट्ठंतपरिणामगो, (1110) दिन में या रात्रि में ग्रहण किये गये गोबर के लेप के प्रायश्चित्त सूत्र , (1111) दिवसभयगो, (1112) दिव्य कामभोगों का , (1113) दिसिविभागो, (1114) दिह्वेन्द्रियरागोपरति, (1115) दीन-अदीन परिणति आदि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1116) दुगूल, (1117) दुगोण, (1118) दुगोत्तफुसिया, (1119) दुग्गूढं, (1120) दुर्गो, (1121) दुल्ललियगोट्ठी, (1122) दुवग्गोवि, (1123) देव और सर्वज्ञ की सिद्धि के अनुमान, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1124) देवजण्णगो, (1125) देवज्जगो, (1126) देवयाभिओगो, (1127) देवानन्दा का यह रूप देखकर गौतमस्वामी ने प्रश्न किया और भ. महावीर ने समाधान किया, (1128) देवों के संयतत्वादि के पूछने पर भगवान द्वारा गौतम का समाधान, (1129) देवों को 900-1000 योजन तक कैसे गंध आती है, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1130) देशविरत श्रावक कोने कहेवो ?, लेखक - सुव्रचचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1131) दोगुंदगो, (1132) दोहणवाडगो, (1133) द्रव्येंद्रियना भेदो अने तेनी व्याख्या, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1134) द्वादशांगीनी नित्यानित्यता, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1135) द्वित्वादि अनेकस्थ धर्म, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1136) धणंजयसगोत्ते, (1137) धणगोत्र, (1138) धणगोव, (1139) धणसंताणगो, (1140) धनगोप, (1141) धम्मकरगो, (1142) धम्मदेसगो, (1143) धरणिगोयरो, (1144) धर्मनाथ जिनालय, हाथीवाळुं देरासर, गोपीपुरा, सुरत, (1145) धिम्मरगो, (1146) नंदगोवं, (1147) नंदिमुयंगो, (1148) नउलगो, (1149) नकुलोपगूहं, (1150) नक्षत्रों का पूर्वादिभागों से योग क्षेत्र और काल प्रमाण, (1151) नक्षत्रों के गोत्र, (1152) नखाग्र भागों के परिकर्म का प्रायश्चित्त सूत्र , (1153) नगरगोत्तिय, (1154) नगरगोयर, (1155) नगोदर, (1156) नग्गयमग्गो, (1157) नग्गोधो, (1158) नग्गोह, (1159) नग्गोहमंथुं, (1160) नङ्गोलिन्, (1161) नन्द के रोगों की वैद्यों द्वारा की गई चिकित्सा निष्फल गई, (1162) नन्द के रोगोत्पति, (1163) नन्दगोप, (1164) नवकारना पंचपद पर,अंगोपांग अने चरणसित्तरी करणसित्तरी पर सझायो , (1165) नाईवग्गो, (1166) नागउर, (1167) नागोद, (1168) नागोदर, (1169) नागोर, राजस्थान, (1170) नाङ्गोल, (1171) नाङ्गोलिक, (1172) नाणाविरागो, (1173) नानूगोधा, (1174) नाम गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (1175) नाम गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति, (1176) नाम-गोत्र कर्म , (1177) नामगोत्त, (1178) नामगोयं, (1179) नामागोयं, (1180) नायगो, (1181) नालगोला, (1182) नाळगोळा, (1183) निगूदतर्क, (1184) निगूहिता, (1185) निगोत, (1186) निगोद, (1187) निगोद इतर, (1188) निगोद जीव, (1189) निगोद नित्य, (1190) निगोद विचार गीत, (1191) निगोद शरीर, (1192) निगोदजीव, (1193) निगोददुःख खगर्भित सीमंधर स्तवन , (1194) निगोदना गोलानुं स्वरुप , (1195) निगोदनी स्वकायस्थिति, जिज्ञासा - सुव्रतचन्द्रविजय, (1196) निगोदर, (1197) निगोदविचारगर्भित महावीर स्तवन , (1198) निगोदशरीर, (1199) निगोदा, (1200) निगोध, (1201) निगोयजीवा, (1202) निग्गमगो, (1203) निग्गोहपरिमंडलसंठाणनाम, (1204) निग्गोहमंडल, (1205) निग्गोहवणे, (1206) निच्चुव्विग्गो, (1207) निजोगो, (1208) नित्यनिगोत, (1209) नित्यनिगोद, (1210) नित्यभोजी और तपस्वी : गोचरकाल , (1211) निमग्गो, (1212) निमित्त उल्लोगो, (1213) निरंतरगो, (1214) निरुवसग्गो, (1215) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के उत्तरोष्ठादि रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1216) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के जंघा आदि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1217) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के उत्तरोष्ठ रोगों के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1218) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के जंघादि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1219) निवन्ननिवन्नगो, (1220) निष्कृष्ट-अनिष्कृष्ट के भेद से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1221) निस्संगो, (1222) निहाल बावनी अथवा गूढ़ा बावनी , (1223) नीच गोत्र, (1224) नीच गोत्र के आस्रव, (1225) नीच गोत्रकर्म, (1226) नीचगोत्र, (1227) नीचैर्गोत्र, (1228) नीय गोय, (1229) नृत्यगोष्ठी, (1230) नेड्डवालगो, (1231) नेमिनाथ जिनालय (उपरना माळे), गोदडनो पाडो, पाटण, (1232) नेमिनाथ जिनालय, काजीनुं मेदान, गोपीपुरा, सुरत, (1233) नो भागों में प्रत्याख्यान के विषय-दिखाना, (1234) नोगौण, (1235) नोगौण्य पद, (1236) पक्षी के दृष्टांत द्वारा स्वर और रूप की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1237) पग गोपाविवा, (1238) पजगो, (1239) पडिल (भ) ग्गो, (1240) पडिलग्गो, (1241) पत्तों आदि से युक्त वृक्ष के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1242) पत्थारपसंगो, (1243) पत्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1244) पदगोष्ठी, (1245) पद्मिनी चरित्र अथवा गोराबादल चौपई, (1246) पनगो, (1247) पर गोलओ, (1248) परमाधामी मरकर अंङ्गोलिक मनुष्य बनते है ,

(1249) परिगोह, (1250) परिज्ञात-अपरिज्ञात की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1251) परिभोगैषणा-विवेक : आर्य मांगू-समुद्र दृष्टांत , (1252) पलिगोव, (1253) पवित्र-अपवित्र मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1254) पवित्र-अपवित्र वस्त्रों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1255) पव्वगो, (1256) पहीणगोत्तागार, (1257) पागोहरी, (1258) पाडुंगोरि, (1259) पाणगोरि, (1260) पायगो, (1261) पारेवयगोवा, (1262) पार्श्वचन्द्र (नागोरीतपागच्छीय), (1263) पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, मोती पोळ, गोपीपुरा, सुरत, (1264) पिंगायणसगोत्त, (1265) पुत्तगो, (1266) पुत्र का \' गोत्रास \' नाम दिया, (1267) पुद्गल परमाणुओं का बन्ध देश से होता है या सर्व से ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1268) पुलाक भक्त ग्रहण हो जाने पर गोचरी जाने का विधि-निषेध , (1269) पुष्प के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के रूप शील संपन्नता के चतुभँगों का प्ररूपण, (1270) पुसागो, (1271) पुस्सायणसगोत्त, (1272) पूर्ण-तुच्छ कुंभ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1273) पृथ्वियों के नाम-गोत्र, (1274) पृथ्वी दडा जेवी गोल नथी , (1275) प्रतिबिंब की पर्यालोचना, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1276) प्रत्येक मुहूर्त में नक्षत्र द्वारा मण्डल के भागों में गमन, (1277) प्रत्येक मुहूर्त में मण्डल के भागों में गति के प्रमाण का प्ररूपण, (1278) प्रत्येक मुहूर्त में मण्डल के भागों में चन्द्र की गति का प्रमाण, (1279) प्रागो, (1280) प्रेक्षणगोष्ठी, (1281) बंधणप्पओगो, (1282) बग्गोल (रोसन्थय), (1283) बदगो, (1284) बलद्दसंघाडगो, (1285) बादर निगोदद्रव्यवर्गणा, (1286) बादर निगोदप्रतिष्ठित, (1287) बादरनिगोद, (1288) बालिंदगोवेइ, (1289) बालेंदगोवे, (1290) बे वखत वैक्रियसमुद्घात, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1291) भ. अरिष्टनेमि का धर्मोपदेश और गौतम की प्रव्रज्या, (1292) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में गौतम आदि अणगार, (1293) भ. महावीर कथित गौशालक का अजिनत्व, (1294) भ. महावीर कथित तिल के पौधे को देखकर गौशालक का चले जाना, (1295) भ. महावीर का समवसरण और गौतम का गौचरी जाना, (1296) भ. महावीर की जीवनचर्या के सम्बन्ध में गोशालक का आक्षेप, (1297) भ. महावीर के समवसरण में गौतम का जन्मान्ध पुरुष के सम्बन्ध में प्रश्न, (1298) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने अभग्नसेन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (1299) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने उम्बरदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (1300) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने देवदत्ता के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (1301) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने नन्दिवर्धन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (1302) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने बृहस्पतिदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (1303) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने सूर्यदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (1304) भ. महावीर के साथ विवाद करने में गोशालक का असामर्थ्य और उसका लौट जाना, (1305) भ. महावीर ने गौतम के मनोगत भाव कहे, (1306) भ. महावीर ने गौतम को गौशालक के चरित्र का पूर्व भाग कहा, (1307) भ. महावीर ने गौतम को स्कंदक के आगमन की सुचना दी, (1308) भ. महावीर ने गौशालक की रक्षा के लिए शीतलेश्या फेंकी , (1309) भ. महावीर ने गौशालक के वचनों का प्रतिकार किया, (1310) भ. महावीर ने गौशालक को छोड़ने का निषेध किया, (1311) भ. महावीर ने गौशालक को हितशिक्षा के वचन कहे, (1312) भंगोठण, (1313) भंगोपदर्शन , (1314) भगवान के कहने से गौशालक से प्रश्न किये, (1315) भगवान के प्रति गौशालक का पुन : आक्रोश, (1316) भगवान गौतम का उत्तर , (1317) भगवान गौतम का प्रत्युत्तर, (1318) भगवान ने गौतम की शंका का निराकरण किया, (1319) भगवान ने गौशालक की तेजोलेश्या का सामर्थ्य और गौशालक का सिद्धान्त कहा, (1320) भगो, (1321) भगौतीदास, (1322) भग्गवेससगोत्ते, (1323) भडगो, (1324) भद्रादि चार प्रकार के हाथियों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1325) भवनपति देवों के भवन और आवास, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1326) भांगउ, (1327) भाव-स्तेन : गोविंदार्य आदि उदाहरण , (1328) भीम के मरने के बाद गोत्रास को कूटग्राह-पद, (1329) भुक्त भोगों के स्मरण का निषेध , (1330) भूगोलपुराण, (1331) भोगल (भूगोल) पुराण , (1332) भोगों से निवृत हो , (1333) भोगोपभोगपरिमाण, (1334) भोगोपभोगसंख्यान, (1335) भौंहो आदि के रोगो का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1336) मंखली और भद्रा का गौशाला में निवास , (1337) मंखली और भद्राने अपने पुत्र का नाम " गौशालक " दिया, (1338) मंगू (आचार्य), (1339) मंगूसा, (1340) मंदरपर्वत और गोस्तूपादि चरमान्तों का अन्तर, (1341) मंदरपर्वत के मध्यभाग से गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों का अन्तर, (1342) मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान वच्चे भेदरेखा, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1343) मधु-विष कुंभ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1344) मधुसिक्थादि गोलों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1345) मन की अविरति पाँचो इन्द्रिय के साथ अनुस्यूत, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1346) मन की अविरति पाँचो इन्द्रिय के साथ अनुस्यूत, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1347) मन:पर्याय में दर्शन की अवधारणा, लेखक - गोयमचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय, (1348) मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (1349) मनोज्ञ और अमनोज्ञ काम भोगों में राग-द्वेष का निग्रह करना चाहिए , (1350) मन्दर और गौतमद्वीप के चरमान्तों का अन्तर, (1351) मरु-गूर्जर की निरुक्ति., (1352) मरुदेवा माताने उच्चगोत्रनो बंध केवी रीते ?, लेखक - राजदर्शनविजय , (1353) महागौरी, (1354) महाराओ श्री गोहड़जी नो जस, (1355) महावीर गौतम छंद, (1356) महावीर गौतमस्वामी छंद, (1357) महावीर वणिक जैसा है-गोशालक का आक्षेप, (1358) महावीरस्वामी जिनालय, खपाटीया चकला, गोपीपुरा , सुरत, (1359) महावीरस्वामी जिनालय, आगममंदिर रोड, गोपीपुरा, सुरत, (1360) महाशतक का गौतम को वंदन करना, (1361) महाशतक के पास गौतम को भेजना, (1362) मांडण (गूगली) , (1363) माइलोगोड, राजस्थान, (1364) मातंग विद्या : गौरी-गांधारी , (1365) मायुंगोयुं, (1366) मारमारगउदीपक, (1367) मार्ग के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1368) मार्गोपसम्पत, (1369) मित्र-अमित्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1370) मिथ्यात्वी जीव को कौन-सा कायवध, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1371) मुक्त-अमुक्त के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1372) मुहम्मद

गोरी, (1373) मूर्द्धाभिषिक्त राजा के छः दोषायतन जाने बिना गोचरी जाने का प्रायश्चित्त सूत्र , (1374) मूलिगउ, (1375) मृगोद्धर्मा, (1376) मेघ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1377) मेघ के दृष्टांत द्वारा माता-पिता के चतुभँगों का प्ररूपण, (1378) मेघ के दृष्टांत द्वारा राजा के चतुभँगों का प्ररूपण, (1379) मेधावी पुरुषों के प्रश्नों के भय से महावीर आरामगृह में नहीं ठहरता है l गोशालक का आक्षेप, (1380) मैथुन सेवन के संकल्प से उत्तरोष्ठ रोगों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1381) मैथुन सेवन के संकल्प से जांघ आदि के रोगों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1382) यान के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के युक्तायुक्त चतुभँगों का प्ररूपण, (1383) युग्य के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1384) युग्य गमन दृष्टांत द्वारा पथोत्पथगामी पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1385) योगों का चन्द्र के साथ योग प्ररूपण, (1386) योगोद्वहन, (1387) योगोद्वहनकाल, (1388) योगोद्वहनक्षेत्र, (1389) योगोद्वहनसदन, (1390) रज्जुगोज्ज, (1391) रस गौरव, (1392) रसगौरव, (1393) रसनेन्द्रियगगोपरति, (1394) रुयगोद, (1395) लगउं, (1396) लवणसमुद्र अंतर्गत गौतम-सूर्य-चंद्रद्वीप-वेलंधर-अनुवेलंधर पर्वतो , (1397) लवणसमुद्र के गोतीर्थ का और गोतीर्थ-विरहित क्षेत्र का प्रमाण, (1398) लवणसमुद्र-कालोदधिसमुद्र में अग्नि होती है, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1399) लांगूल, (1400) लागू, (1401) लेप की उदक शाला के समीप गौतम ठहरे हुए थे , (1402) लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना, (1403) लोहार्य-गौतम द्वारा वीर-भक्ति , (1404) वगूए, (1405) वगूचे, (1406) वगूतुं, (1407) वगूतो, (1408) वगूत्यो, (1409) वगोयुं, (1410) वगोरइ, (1411) वग्गोअ, (1412) वग्गोरमय, (1413) वचनगोचरें, (1414) वचनयोग में इन्द्रिय तथा मन की अविरति, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1415) वचनयोग में इन्द्रिय तथा मन की अविरति, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1416) वत्थी नगरी में रहने वाली " हालाहला " नामकी कुंभारी की हाट में " गोशालक ", (1417) वन खण्ड के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1418) वनखण्ड के अनेक भागों में आलिगृहादि, (1419) वनखण्ड के अनेक भागों में जाइ-मण्डप, आदि, (1420) वर्ज्य के दर्शन उपशमन और उदीरण की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1421) वाग अगोचर, (1422) वागउ, (1423) वाद करने वालों की परस्पर (एक दूसरे की) निन्दा करते हो l गोशालक का आक्षेप, (1424) वाद्यगोष्ठी, (1425) वासुपूजयस्वामी जिनालय, मोती पोळ, गोपीपुरा, सुरत, (1426) विकृतिगोपुच्छा, (1427) विगूंचु, (1428) विगूचइ, (1429) विगूतउ, (1430) विगूतु, (1431) विगूयइ, (1432) विगोइ, (1433) विगोई, (1434) विगोणउं, (1435) विगोणहार, (1436) विगोयां, (1437) विगोवइ, (1438) विग्गोव, (1439) विग्गोवय, (1440) विग्रहगतिमां आयुष्य अने आहारकपणुं, लेखक - सुव्रतचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय, (1441) विजयादि चार विमानों में उत्कृष्ट स्थिति, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1442) विज्जाहरगोवाल, (1443) विद्याधरगोपाल, (1444) विद्यासंवादगोष्ठी, (1445) विभूषा के संकल्प से उत्तरोष्ठादि रोगो में परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1446) विभूषा के संकल्प से जंघादि के रोगो के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1447) विमलनाथ-घरदेरासर जिनालय, भणशाळी पोळ, गोपीपुरा , सुरत, (1448) विरंगू, (1449) विशेषावश्यकभाष्य अने आवश्यकचूर्णिमां प्ररूपणाभेद, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय, (1450) विष्णुकुमार मुनि के वैक्रिय शरीर का माप क्या ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1451) विष्णुकुमार मुनि के वैक्रिय शरीर का माप क्या ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1452) वीणागोष्ठी, (1453) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1454) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1455) वीर-गौतम दृष्टांत , (1456) वीर-गौतम-कपिलसुत दृष्टांत , (1457) वेगउ, (1458) वैक्रिय विकुर्वणा, लेखक - सुव्रतचन्द्र-कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय, (1459) वैक्रियलब्धि से विकुर्वणा करके आत्मप्रदेश उसमें ही..., जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1460) वैक्रियिकशरीराङ्गोपांग, (1461) वैगूर्विक, (1462) वैमानिक देवों की विभूषा और कामभोगों का प्ररूपण, (1463) वैयावृत्य करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1464) व्यवहार प्रकार : प्रधानता-गौणता , (1465) व्रण दृष्टांत के द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1466) शंख के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1467) शंखेश्वर पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, भणशाळी पोळ, गोपीपुरा , सुरत, (1468) शक्रादि की गति के विषय में गौतम के प्रश्न और भगवान के समाधान, (1469) शत्रुंजय पर्वत पर गौतम की सिद्धी, (1470) शय्यातर का नाम-गोत्र.... , (1471) शरीर-इन्द्रिय और योगों के रचना काल में क्रियाओं का प्ररूपण, (1472) शरीराङ्गोपाङ्गनाम, (1473) शरीराङ्गोपांग, (1474) शांतिनाथ जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत, (1475) शांतिनाथ जिनालय, हजीरावाळो खांचो, गोपीपुरा , सुरत, (1476) शांतिनाथ जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा , सुरत, (1477) शामळा पार्श्वनाथ जिनालय (अलग गोख), झवेरीवाडो, पाटण, (1478) शिष्य बनाने के लिए गौशालक की पुन : प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता, (1479) शिष्य बनाने के लिए गौशालक की प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता, (1480) शिष्य बनाने के लिए गौशालक ने पुन : प्रार्थना की और भगवान ने अनुमति दी- गौशालक का साथ विहरण, (1481) शीतलनाथ जिनालय, पडीगूंदीनो पाडो, पाटण, (1482) शीतलनाथ जिनालय, सुभाषचोक, गोपीपुरा, सुरत, (1483) शुद्ध-अशुद्ध मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1484) शुद्ध-अशुद्ध वस्त्रों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1485) शुद्धगोवहित, (1486) श्रावस्ती के लोगों में चर्चा, (1487) श्रीगच्छनायक पट्टावली सज्झाय अथवा सोमविमल सूरि गोत , (1488) श्रीगौतमस्वामीना महसेन राजर्षि नामना शिष्य देवलोकमा !, लेखक - तारकचन्द्रविजय, (1489) श्रीगौतमस्वामीनी अष्टापद तीर्थनी यात्रा अंगे एक नवी वात, लेखक - शीलचन्द्रविजय, (1490) श्रुगालों को देखकर कछुओं ने अपने अंगों को संकुचित कर लिए , (1491) श्रुतनिश्रित मतिज्ञान, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1492) श्रुतसंविभागोऽयं मैत्रीमण्डपायताम्... (अग्रलेख), लेखक - मुक्तिचन्द्र-मुनिचन्द्रसूरिजी, (1493) श्रोत्रेन्द्रियरागोपरति, (1494) संगोढण, (1495) संगोली, (1496) संगोल्ल, (1497) संघाटकने छोडीने

एकला गोचरी जवाना कारणभूत दोषो, लेखक - तारकचन्द्रसागर, (1498) संभवनाथ जिनालय, वकीलनो खांचो. गोपीपुरा , सुरत, (1499) संभवनाथ जिनालय, मोतीपोळना नाके, गोपीपुरा, सुरत, (1500) सइगू, (1501) सत्य-असत्य परिणतादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1502) सत्व की विवक्षा से पुरुषों के पाँच भंगों का प्ररूपण, (1503) सद्दालपुत्र का गोशालक-वंदन संकल्प, (1504) सप्तगोदावर, (1505) समग्गउ, (1506) समुद्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1507) सहज दिव्यभोगों का निदान... , (1508) सांगो, (1509) सागोटियो, (1510) सागोदिया, मालवा, (1511) साङ्गोपाङ्ग श्रुत, (1512) सात गौरव, (1513) सात नरक और उनके गोत्र , (1514) सात नरक पृथ्वियों की अपेक्षा विस्तार से नैरयिक प्रवेशनक में प्रवेश करने वालों के भंगों का प्ररूपण, (1515) सातगौरव, (1516) साधु गोचरी व्होरवा जाय त्यारे उपाश्रयथी नीकळता शुं बोले ?, लेखक - वंदनरुचिविजय, (1517) सामायिकना पच्चक्खाणनो एक प्रकार, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1518) सारथि के दृष्टांत द्वारा योजक-वियोजक पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1519) सिद्ध होने वाले के संहनन के सम्बन्ध में गौतम के प्रश्न, (1520) सींगउ, (1521) सुखादिगोचरा प्रमा, (1522) सुगत-दुर्गत की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1523) सुरगो, (1524) सुरजमंडन पार्श्वनाथ जिनालय, हाथीवाळुं देरासर, गोपीपुरा, सुरत, (1525) सुविधिनाथ-घरदेरासर जिनालय, उमेश मेन्शन, गोपीपुरा , सुरत, (1526) सुहुम निगोद, (1527) सूंगो, (1528) सूई आदि के विपरीत प्रयोगो के प्रायश्चित्त सूत्र , (1529) सूक्ष्मनिगोद, (1530) सेना के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1531) स्पर्शनेन्द्रियरागोपरति, (1532) स्व-पर का निग्रह करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1533) स्वप्नसृष्टि में मन की भूमिका, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (1534) हरगोवन, (1535) हरगोवनदास, (1536) हरगोविंद, (1537) हाथी के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1538) हार नगोदर, (1539) हिंगोबल, (1540) हिंगोल, (1541) हिंसा में योगों की तरतमता और कर्मबन्ध , (1542) हींगूआणि, (1543) हुइगउ, (1544) हुकुमचंद जैन कानूनगो (अमर शहीद), (1545) हेमगौर